Roll No. : ....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **3**

APF–2033

M.A. (Final) Examination, 2022

SANSKRIT

Paper - VI (क)

(शास्त्रीय साहित्य एवं काव्य)

Time : 3 Hours] [*Maximum Marks : 100*

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– पाँच में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

1. समस्तदशप्रश्नानामुत्तरं ददातु। कयोश्चित् द्वयोः उत्तरं संस्कृतभाषायां लिखतु।

   (i) प्रसादगुणस्य लक्षणं लिखतु।

   (ii) लावण्यगुणस्य लक्षणं लेखनीयम्।

(iii) ब्राह्मण: वरदानेन सरस्वति कं पुत्रं सुषुवे।

(iv) काव्यमीमांसाया: द्वितीयाध्यायस्य नामोल्लेखं कुरुत।

(v) कौटिलीयार्थशास्त्रस्य प्रथमाधिकरणस्य नाम किम् ?

(vi) कौटिलीयार्थशास्त्रस्य प्रथमाधिकरणस्य सप्तमाध्यास्य नामोल्लेखं लिखतु।

(vii) हर्षचरितस्य रचयिता क: ?

(viii) हर्षवर्धनस्य भगिन्या: पत्यु: नाम लिखतु।

(ix) महाश्वेताया: मातु: ना का आसीत्।

(x) महाश्वेता कस्य देवताया: अर्चनां करोति स्म ?

खण्ड–ब

नोट :– केषाञ्चित् पंचप्रश्नानामुत्तरं ददातु। प्रश्न संख्या 4,5 अनिवार्या:।

2. कारिकाया: सप्रसङ्ग व्याख्या कुर्यात्–

लोकोत्तरचमत्कारकारि कारिव वैचित्र्यसिद्धये।

काव्यस्याऽयमलङ्कार: कोऽप्यपूर्वो विधीयते॥

3. सप्रसङ्ग व्याख्या करणीया–

असमस्तमनोहारिपदविन्यास जीवितम्।

माधुर्यं सुकुमारस्य मार्गस्य प्रथमो गुण:॥

4. संस्कृतमाध्यमेन सप्रसंग व्याख्या करणीया–

निगम वाक्यानां न्यायै: सहस्रेण विवेक्त्री मीमांसा। सा च द्विविधाविधि विवेचनी ब्रह्मनिदर्शिनी च। अष्टादशैव श्रुत्यर्थस्मरणात् स्मृत:। तानीमानि चतुर्दशविद्यास्थानानि, यदुत वेदाश्चत्वार:, षड्ङ्गानि, चत्वारि शास्त्राणि इत्याचार्या:। तान्येतानि कृत्स्नामपि भूर्भुव: स्वस्त्रयीं व्याजस्य वर्तन्ते।

5. संस्कृते सप्रसंग व्याख्या विधेया–

''आन्वीक्षकी त्रयी वार्ता दण्डनीतिश्चेति विद्या:।''

6. सप्रसंग व्याख्या विधेया–

''अर्थ एव प्रधान इति कौटल्यः। अर्थमूलौ हि धर्मकामाविति।''

7. सप्रसंङ्ग व्याख्यां करोतु–

प्रबुद्धस्य चास्य मुहुर्मुहुर्दक्षिणेतरमाक्षि पस्पन्दे। गात्रेषु चाकस्मादेव वेपथुर्षिप्रथे। निर्निमित्तमेवान्तर्बन्धन स्थानाच्चालेव हृदयम्। अकारणादेव चाजायत गरीयसी दुःखासिका। किमिदमिति च समुत्पन्नविविध-विकल्पविमथितमतिरपगतधृतिश्चिन्तावनमितवदनः स्तिमिततारकेण चक्षुषा समुद्भिद्यमानस्थलकमलिनी-वनामिव चकार चकोरेक्षणः क्षणं क्षोणीम्।

8. सप्रसंग व्याख्या विधेया–

'ततोऽवतीर्य्थ तरुशाखायां बद्ध्वा तुरङ्गम् उपसृत्य भगवते भक्तयः प्रणम्य त्रिलोचनाय, तामेव दिव्ययोषितमनिमिषपक्ष्मणा निश्चल-निबद्धलक्ष्येण चक्षुषा पुनर्निरूपयामास।' उदपादि चास्य तस्या रूपसम्पदा कान्त्या प्रशान्त्या चाविर्भूत विस्मयस्य मनसि–अहो, जगति जन्तूनामसमर्थितोपनतान्यापतन्ति वृत्तान्तराणि।

खण्ड–स

नोट :– द्वयोः प्रश्नयोः उत्तरं ददातु–(शब्दाः सीमा **500** शब्द)

9. आचार्यकुन्तक सम्मताः वक्रताभेदाः निरूपणीयाः।

10. काव्यमीमांसायां चर्चिताः प्रमुखविषयाः वर्णनीयाः।

11. कौटिलीय-अर्थशास्त्रमनुसृत्य 'त्रयीस्थापनाः' इति विवेचनं कुरु।

12. हर्षचरितस्य पञ्चमोच्छ्वासस्य वर्ण्यविषयं प्रतिपादयत्।